P: ISSN NO.: 2321-290X
E: ISSN NO.: 2349-980X
RNI : UPBIL/2013/55327
Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika
Vol-II * Issue-X*June-2015

# बाल अपचार/बालश्रम के उत्तरदायी कारक एवं समाधान के उपाय (बालश्रम के विशेष संदर्भ में) (जिला जांजगीर–चांपा एवं जिला बिलासपुर के विशेष संदर्भ में समाजशास्त्रीय विश्लेषण)

**व्रिन्दा सेन गुप्ता**
सहायक प्राध्यापिका,
समाजशास्त्र विभाग,
टी.सी.एल. गर्वन्मेन्ट पी.जी. कालेज,
जांजगीर

**मदन पाटले**
सहायक प्राध्यापक,
हिन्दी विभाग,
टी.सी.एल. गर्वन्मेन्ट पी.जी. कालेज,
जांजगीर

**सारांश**

प्रस्तुत शोध पत्र समाज में व्याप्त बाल अपराध से संबंधित है। बाल अपचार के कारकों का निर्धारण करते समय कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है किसी बालक या बालिका का अपचारी व्यवहार परिवर्तनशील, सामाजिक प्रक्रिया का एक अंग है जिसे व्यक्तिगत व सामाजिक परिस्थितियां और घटनाओं व अनुभवों जिसका वे एक भाग है के संबंधों के साथ ही। समझा जा सकता है, इस शोध पत्र का उद्देश्य है समाज व परिवार से संपूर्ण रूप से बाल अपराधी की संख्या को मिटाना है एवं उन्हें शिक्षा की ओर जागरूक करना है। निष्कर्ष स्वरूप यदि प्रत्येक व्यक्ति एवं शासन कड़े कानून बनाकर अमल करने लगे तो बाल अपराधियों की संख्या को पूर्णतः बंद आर कम किया जा सकता है।

**मुख्य शब्द** : बाल अपराध, बालश्रम, बेरोजगारी, कानून, व्यक्तित्व, अशिक्षा।

**प्रस्तावना**

बाल अपचार के कारकों का निर्धारण करते समय कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है। किसी बालक या बालिका का अपचारी व्यवहार परिवर्तनशील सामाजिक प्रक्रिया का एक अंग है जिसे व्यक्तिगत वा सामाजिक परिस्थितियों और घटनाओं व अनुभवों जिसका वे एक भाग हैं। के संबंधों के साथ ही समझा जा सकता है। दूसरे शब्दों में बाल अपचार, (किशोर अपराध) बालक या बालिका के विकास को प्रभावित करने वाले सभी तत्वों का स्वाभाविक परिणाम है। बाल अपचारियों के कारणों की विभिन्नता हाते हुए भी यह एक सुस्थापित परिकल्पना है कि बाल अपचार के विकास में कुछ निश्चित प्रकार के प्रभाव होते हैं जो उसके व्यवहार पर विशेष प्रभाव डालने का कार्य करते हैं। किसी भी बालक या बालिका के व्यवहार को तभी समझा जा सकता है जब उस सामाजिक संसार का ज्ञान, प्राप्त किया जाए जहां वह रहता है। बच्चे समुदाय के सदस्य के रूप में जीवन जीते हैं। गतिशील सामाजिक दुनिया की गतिविधियों में भाग लेते हैं। अतः केवल उनके व्यवहार का एकांगी अध्ययन कृत्रिम होगा। उनके व्यवहार को समझने के लिए उन समूहों का भी अध्ययन किया जाना आवश्यक है, जिनके बीच वे रहते हैं। बालक क्रमिक रूप से अपने परिवार खेल समूह और फिर पड़ोरियों के संपर्क में आता है। यह समूह उकसे व्यक्तित्व के निर्माण प्राथमिक भूमिका का निर्वाह करते हैं। बालक का उन समूहों के साथ संबंध आमने–सामने का होता है और इनके बीच उसके अपने को भावना जुड़ी रहती है। ऐसे समूहों के माध्यम से ही बच्चे सामाजिक दुनिया और सामाजिक तथा निजि विचारों के संसार में प्रवेश करते हैं।

**महत्व**

अपचारी बालकों के साथ जुड़े हुए लोगों और समूहों का मनोवैज्ञानिक और सामाजिक रूप से अध्ययन और उसके संपूर्ण वातावरण का ज्ञान आवश्यक हो जाता है। प्रसिद्ध समाजशास्त्री प्रो. पाल डब्लयू टप्पन ने इसीलिए कहा है कि कोई भी व्यवहार एक निश्चित समय पर संबंधित व्यक्ति के व्यक्तित्व और उस समय के वातावरण पर निर्भर करता है। व्यक्तित्व भी किसी विशिष्ट समय में स्वयं या उस व्यक्ति के व्यक्तिगत और मनोवैज्ञानिक स्वरूप का परिणाम हो सकता है जो उसके चारो तरफ के वातावरण को प्रभावित करता है।

## अध्ययन की प्रकृति

व्यक्ति और समाज का अटूट संबंध है इनमें से किसी एक के बिना दूसरे की कल्पना नहीं की जा सकती है। इलियर्ट तथा मेरिल ने इसीलिये कहा है कि '' व्यक्ति अत्यंत विशाल समाज का एक सूक्ष्म रूप है समाज और एकांगी व्यवस्था नहीं है। प्रत्येक समाज में अच्छे और बुरे दोनों प्रकार के तत्व सदैव विद्यमान होते हैं, इसमें अच्छे तत्व समाज को संगठित करते हैं, वहीं बुरे तत्व समाज को विघटन की ओर ले जाते हैं। दूसरे शब्दों में सामाजिक संगठन को दृष्टि में रखते हुए व्यक्तियों को दो वर्गों में सामाजिक और समाज विरोधी रखा जा सकता है। यही समाज विरोधी तत्व जब समाजिक संरचना और उसकी व्यवस्था के विपरीत कार्य करते हैं तब अपराध का जन्म होता है। सामाजिक संरचना में समाज के विभिन्न संस्थाओं में पारस्परिक संबंधों, सामाजिक स्थिति और कार्यों की एक निश्चित व्यवस्था रहती है। जब इस व्यवस्था के विपरीत कार्य होता है तब उसे हम सामाजिक विघटन कहते हैं। ए.के.कोहेन. ने इसलिए सामाजिक विघटन को विचलित व्यवहार कहा है। सामाजिक जीवन की अनेक समस्यायें विघटन की ही देन है। बाल अपचार की समस्या इस दृष्टि से सामाजिक विघटन का परिणाम है।

## अध्ययन के उद्देश्य

बाल अपचार/बालश्रम मानव समाज की एक प्राचीन समस्या है। इस पर विगत कुछ दशकों से गहन अध्ययन किया जा रहा है और इसके परिणाम स्वरूप इस संबंध में कुछ नये दृष्टिकोंण सामने आए हैं विधि का उल्लंघन बालकों, किशोरों या अवयस्कों द्वारा एक अंतर्राष्ट्रीय चिंतन का विषय हो गया है। आधुनिक समाज भीषण परिवर्तन और सामाजिक विघटन के काल से गुजर रहा है, सामाजिक व्यवस्था में तीव्र गति से हो रहे यह असामान्य परिवर्तन अवयस्क मन को शीघ्रता से प्रभावित करते हैं। समाज की दशायें और पारिवारिक वातावरण अवयस्कों को सदाचार या अपचार का मार्ग पकड़ने में सहायता करती है। आज बाल अपचार पर इसीलिए गहन चिंतन एवं शोध की आवश्यकता है।

## परिकल्पना

1. बाल अपचारियों एवं बालश्रमिकों की दशा को सुधार कर सकारात्मक दिशा प्रदान की जा सकती है।
2. बाल अपचारियों एवं बालश्रमिकों के मनोवैज्ञानिक एवं शारीरिक दशाओं पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है।
3. जैविक तत्व बाल अपचार के लिये उत्तरदायी कारक है।

## शोध प्रविधि

बाल अपचार एक सामाजिक समस्या है जिस पर इस बदलते हुए परिवेश मे शोध की नितांत आवश्यकता है जिला जांजगीर–चांपा एवं बिलासपुर में बाल अपराध बालश्रमिक के अंतरनिहित कारणों को खोज निकालना इसलिए भी आवश्यक है कि इसके पूर्व इस विषय पर कोई व्यवस्थित शोध कार्य नहीं हुआ है इस शोध कार्य में बाल अपचारियों की क्रिया को ध्यान में रखकर उसके निकट कारणों को खोजना तथा कार्य कारणों के संबंध का प्रतिष्ठापन करना है। इसलिये अन्वेषणात्मक शोध प्ररचना अपनाई गई है।

मूल रूप से इस शोध प्ररचना में पूर्ण निर्धारित उपकल्पना का परीक्षण किया जाता है। अन्वेषणात्मक शोध प्ररचना की सफलता के लिये कुछ अनिवार्यताओं का पालन करना पड़ता है।

## सीमाएं

यह शोध कार्य एक ऐसी सामाजिक समस्या पर किया गया है जो कि संपूर्ण विश्व में एक ब्याधि का रूप धारण करती जा रही है, आज यह समस्या ग्रामीण परिवार से युक्त परंपरागत समाज में भी फैल रही है। यह एक विड़ंबना है कि समाज में एक तरफ तो अनेक बार बाल अपचारियों के अपराध पुलिस में दर्ज नहीं कराए जाते तो दूसरी तरफ समाज के समृद्ध और संपन्न लोगों के बच्चों द्वारा किये गये अपराधों का उल्लेख नहीं किया जाता, क्योंकि इन्हें कई प्रकार से संरक्षण प्राप्त हो जाता है। इस तरह शोध कार्य में :–

1. यह अध्ययन बाल अपचार की सामाजिक समस्या पर किया गया है।
2. शोध क्षेत्र बाल न्यायालय, बाल संप्रेषण गृह से संबंधित है।
3. यह अध्ययन बाल अपचार के जो प्रकरण बाल न्यायालय में प्रस्तुत किये गए हैं उनसे भी संबंधित है। इस शोध में बाल अपचार को शारीरिक, जैविक एवं मनोवैज्ञानिक दशाओं का अध्ययन किया गया है।

## शारीरिक एवं जैविक तत्व

अपराध में इन तत्वों की भूमिका को सर्वप्रथम प्रसिद्ध जेल चिकित्सक सीजर लोम्बोसो ने स्वीकार किया है। इसी सैद्धातिक अवधारणा के आधार पर इन्हें जटिल अपराधियों अनेक शारोरिक दोषों से युक्त थे। अमेरिका में अलेस्ट ए यूटन और बिलियम एच रोल्डन ने भी इस क्षेत्र में अध्यन करते हुए यह पाया है कि मनुष्य के शारीरिक ढांचे का उसके व्यवहार में प्रभाव पड़ता है शारीरिक ढांचे और मनोवैज्ञानिक तत्वों का अंतः संबंध बालक के व्यवहार को प्रभावित करता है यह भी सही है। भावनायें और मानसिक दशायें अलग–अलग व्यक्तियों की भिन्न–भिन्न

हो सकती है। लेकिन इनमें कुछ व्यक्तित्व को निर्मित करने वाली समानतायें भी होती है।

**मनोवैज्ञानिक तत्व**

मनोवैज्ञानिक बाल अपचार और अपराध को व्यक्तिगत मानते हुए अनेक तत्वों का वर्णन करते हैं मनोवैज्ञानिक कारक भौतिक दशाओं के साथ मिले होते हैं। स्वास्थ्य की स्थिति और शारीरिक अपंगता व्यक्ति के मानसिक और भावनात्मक क्रियाओं को प्रभावित करती है और मन की उलझन व्यक्ति के भौतिक क्रिया कलापों को बिगाड़ देती हैं। व्यक्ति के सोंचने महसूस करने और कार्य करने की प्रक्रिया इनसे प्रभावित होती है और व्यक्ति इस तरह असामान्य कार्य कर बैठता है। इस तरह यह मनोवैज्ञानिक तत्व बाल अपचारियों में मानसिक दोष उत्पन्न कर देता है।

**परिणाम**

बच्चों की पढ़ाई पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है ये न पढ़ पाते ह और न ही समाज में कुछ अच्छा काम कर पाते हैं जगह–जगह दुत्कार, डांट, मारखाना इन मासूमों की दिनचर्या है गरीबी व अशिक्षा के कारण कुपोषण और जनसंख्या वृद्धि जैसी समस्याओं का जन्म होता है।

**सुझाव**

गहन सर्वेक्षण, जनजागरूकता, शिक्षा विशेष अभियान, आर्थिक नियोजन, विकास कार्यक्रमों का शुभारंभ

**निष्कर्ष**

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि बालश्रमिक/बाल अपचारी अत्यंत गरीब परिवार से होते हैं जिनके अभिभावक परिवार का भरण पोषण करने में असमर्थ हैं या अभिभावक नहीं है। सरकार के द्वारा जनजागरूकता के तहत उन्हें जागरूक कर कड़े नियम बनाकर श्रम से रोका जा सकता है एवं भावी पीढ़ि को शिक्षा के महत्व को बताकर उन्हें उच्चे शिक्षा की ओर दिशा प्रदान की जा सकती है। मनोचिकित्सक यह मानते हैं कि सभी बच्चों के सोंचने समझने की शक्ति एक जैसी नहीं होती किसी बच्चों मे यह शक्ति अधिक हाती है तो किसी बच्चे में कम होती है। जब बच्चे विद्यालय में अध्ययन के लिये जाते हैं तो शिक्षण संस्थाओं में शिक्षकों के सामने अनुशासनहीनता की बात आती है या अपने आदेश का पालन होते नहीं दिखते तो वे कड़ाई के साथ अमानवीय व्यवहार कर बैठते हैं। आज का बच्चा सूचना क्रांति के युग का एक हिस्सा है। बच्चों के साथ दोस्ताना व्यवहार कर उनके भविष्य को संवारा जा सकता है।

**केस स्टडी**

क नाम के उत्तरदाता से साक्षात्कार के माध्यम से पूछा गया कि आप मजदूरी क्यों करते हो तो उनका जवाब था कि परिवार में माता–पिता नहीं है। दो छाटे भाई बहनों का पालन पोषण करना है। इसीलिए मैं श्रम कर जीविकापार्जन के लिए पैसे कमा रहा हूं। मालिक के द्वारा कई बार शारीरिक चोट एवं मानसिक आघात पहुंचाई जाती है तो भी पापी पेट का सवाल है करके श्रम कार्य को करना पड़ता है।

**संदर्भ सूची**

1. (कुलश्रेष्ठ जे.पी. 1972), चाईल्ड लेबर इन इंडिया पब्लिसिंग नई दिल्ली
2. (शर्मा, डॉ.मुकेश कुमार, 2005) बाल मजदूरी का बदहाल बचपन, कुरूक्षेत्र नई दिल्ली
3. (सिंह, बी.के.चाईल्ड डेवलपमेन्ट इन इंडिया 2006)
4. Bhatt, P.R.(2003) : Changes in Workforce Structure in India, The Indian Jurnal of Labour of Economics, Vol.46 No. 4PP 8277&886.
5. Tappan Paul W., "Juvenile Delinqency in Rewa 1990 Page 192.
6. Eysenck, H.J. "Crime and Personality"(Rev.ed.) Routledge and Kegan Paul Ltd. London. 1970
7. Shukla, Akhilesh "Juvenile Deliquency in Rewa 1990 Page 192.